दिनांक :- 07-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- B.A Part (I) प्रतिष्ठा इतिहास (History Honours)

ताम्र पाषाण काल (2000 ई० पू० से 500 ई० पू०)

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि में हम ताम्रपाषाणकालिक स्थलों को दो भागों में बाँट सकते हैं।

(1) परवर्ती हड़प्पा संस्कृतियाँ (2) अन्य ताम्र पाषाणकालीन संस्कृतियाँ

इसके अलावा कुछ अन्य संस्कृतियाँ निम्नलिखित थीः चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृतियाँ और उत्तर काले पॉलिश वाली मृद्भांड संस्कृतियाँ।

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के पश्चात् भारतीय उपमहाद्वीप में कतिपय संस्कृतियाँ अस्तित्व में आईं। सिंधु सभ्यता के पतन के पश्चात् क्रमबद्ध नगर योजना, पक्की ईंटों का प्रयोग, लेखनकला, मानक माप व तौल की प्रणाली आदि छोड़ दिए गए। परंतु संभवतः इनका एक

Scanned with CamScanner

सकारात्मक प्रभाव था ग्रामीण क्षेत्रों में धातु तकनीकी का प्रसार।

सिंधु सभ्यता के पतन के पश्चात् कुछ ऐसी ताम्र पाषाणकालीन संस्कृतियाँ अस्तित्व में आई जिन पर सिंधु सभ्यता का प्रभाव देखा जा रहा है इन्हें परवर्ती हड़प्पा संस्कृति के नाम से जाना जाता है।

इस संस्कृति के अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण संस्कृतियाँ इस प्रकार है – सिंधु में झूकर संस्कृति,

पंजाब व बहावलपुर में कब्रगाह 'एच' संस्कृति।

गुजरात में लाल-चमकीले मृदभाण्ड संस्कृति।

पंजाब हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में पीले मृदभाण्ड संस्कृति।

गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में गैरिक मृदभांड संस्कृति।

ताम्रपाषाणकालीन कालीन कृषि संस्कृति :- इस संस्कृति के अंतर्गत तांबे एवं पत्थरों के उपकरणों का प्रयोग साथ साथ होता था यद्यपि सीमित रूप में निम्न

गुणवत्ता से युक्त कांस का भी प्रयोग होता था।

कुछ ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ दक्षिण पूर्व राजस्थान, मध्य प्रदेश, के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी महाराष्ट्र में स्थापित हुई। इसके अलावा कुछ बस्तियाँ पूर्वी भारत व दक्षिणी भारत में भी स्थापित हुई। इन ताम्र पाषाण कालीन संस्कृतियों की निम्नलिखित महत्वपूर्ण विशेषताएँ थी।

(1) चित्रित बर्तनों का प्रयोग जो मुख्यतः लाल पर काले रंगों से रंगे थे।

(2) सिलिकायम पत्थरों के ब्लेड व पत्थरों का अत्यधिक विकसित उद्योग।

दक्षिण पूर्व राजस्थान में अहार व बनास संस्कृति का विकास हुआ। इसका विकास बनास की घाटी में हुआ। इसका प्रारूप स्थल अहार था। यद्यपि गिलुण्ड भी इसी से संबद्ध है। गिलुंड से ईंटो के आकार वाले ईंटों से बने एक विशाल भवन के अवशेष प्राप्त हुए हैं। एच. डी. सांकलिया के द्वारा किए गए उत्खनन में वहां से अग्नि कुंड का साक्ष्य भी मिलता है।